रषायरिकर्त्रे रुप्यायरिषोधर्मस्तत्रहितायधर्मरिद्धकर्त्रे गोरषायनंदिरूपाय रषायधर्माय करंकराय करीगतौनित्यवीप्तयोरितिद्वित्वं मुमागमआर्षः वाष्वादिरूपेणनित्यंगमनशीलायेत्यर्थः कालायवा दंडायनियंत्रे पचपचायनित्यंभूतानांपाककर्त्रे किरपच्योःपचायच् ७ ॥ ९८ ॥ गीर्वरःअतिवरोधेनुः ईप्तितमात्रदानंवरः ततोप्यधिकदानंअतिवरः वरदेवरदायिकवंतस्यातोधातोरि देखारान्यंत्रे प्रात्ते पचपचायनित्यंभूतानांपाककर्त्रे किरपच्योःपचायच् ७ ॥ ९८ ॥ गीर्वरःअतिवरोधेनुः ईप्तितमात्रदानंवरः ततोप्यधिकदानंअतिवरः वरदेवरदायिकवंतस्यातोधातोरि स्यालोपेरूपं ५ ॥ ९९ ॥ रक्तोरागवान् विरक्तस्तदन्यस्तदुभयास्त्रात्यकाय भावनायध्यात्रे संभिन्नायकारणहृष्येणसर्वतेनुस्यूताय विभिन्नायकार्यहृष्याय विभिन्नायकार्यहृष्याय विभिन्नायकार्यहृष्याय विभिन्नायकार्यहृष्याय विभिन्नाद्यक्षेत्र विभिन्नाद्यक्षेत्र विभिन्नाद्यक्षेत्र प्राप्ति प्राप्ति पच्यववत् चिष्ठ स्वालं स्वालं स्वलंकित्यायेत्यर्थः ६ ॥१०३॥ पुंसांसहस्रेर्युगपत्आध्याताएकापिसतीप्रतिविवार्कवत्पत्ये ॥ ॥ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ पुंसांसहस्रेर्युगपत्आध्याताएकापिसतीप्रतिविवार्कवत्पत्ये ॥ ॥ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ पुंसांसहस्रेर्युगपत्आध्याताएकापिसतीप्रतिविवार्कवत्पत्ये ॥ ॥ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ पुंसांसहस्रेर्युगपत्आध्यात्र । ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १

नमोरषायर्थायगोरषायरषायन्॥ कटंकरायदंडायनमःपचपचायन॥ ९८॥ नमःसर्वविरिष्ठायवरायवरदायन्॥ वरमाल्यगंधवस्नायवरातिरवदेनमः॥ ॥ ९९॥ नमोरक्तविरक्तायभावनायाक्षमालिने॥ संभिन्नायविभिन्नायछायायातपनायन्॥ १००॥ अघोरघोरस्पायघोरघोरतरायन्॥ नमःशिवायशां तायनमःशांततमायन्॥ १००॥ एकपाद्वहुनेत्रायएकशीष्णीनमोस्तुते॥ रुद्रायक्षुद्रलुव्धायसंविभागित्रयायन्॥ २॥ पंचालायसितांगायनमःशमशमा यन्॥ नमश्रंदिकघंरायाघंरायघंरघंरिने ॥३॥ सहस्राध्मातघंरायघंरामालात्रियायन्॥ प्राणघंरायगंधायनमःकलकलायन्॥ प्र॥ हूंहूं हूंकारपारायहूं हूंकार त्रियायन्॥ नमश्रमशमेनित्यंगिरिरह्मालयायन्॥ ५॥ गर्भमांसस्रगालायतारकायतरायन्॥ नमोयज्ञाययजिनेहुतायप्रहुतायन्॥ ६॥

कंपरिसमाप्ताचंटास्ययोगबलवतःसतथा तादशघंटामालापियाय प्राणःपंचरित्तर्वायुःसएवघंटावत्शब्दहेतुर्यस्यतस्मैप्राणघंटाय गंधःप्रसिद्धः कलकलःऊप्माकोलाहलोवा ५॥१०४॥ हूंकारःकोधवर्णस्त स्यपरोंतःशमःहूंकारोयाज्ञिकप्रसिद्धःहूंद्दितिहिकत्यभूर्भुवःस्वरोमितिजपत्येषोभिह्कित्रद्धितिआश्वलायनायुक्तोऽभिह्विकारस्तस्यपारःभूरादिलोकेभ्यःपरंशांतंब्रह्म हूंह्कारआकाशःऊकारःपष्ठीशिवमूर्तिःस्य् स्यपरोंतःशमःहूंकारोयाचित्रकार्येति कोधवर्जहूंकारद्वयियाय शमशमशातोभवशांतोभवत्याचष्टेशमश स्ताभ्यांनामस्त्रपात्मकःप्रपंचोलक्ष्यते मकारस्तस्यकारणमीश्वरस्तस्यपारस्तूरीयंशांतंब्रह्म तदिदमुक्तंहंहूंह्कारपारायेति हूंहूंकारपियायेति कोधवर्जहूं ह्वारद्वयियाय शमशमशातोभवशांतोभवत्याचष्टेशमश स्ताभ्यानमस्त्रपात्मकःप्रपंचित्रतेभीवादिकत्वमार्षे शमशमतीतिशमशम् तस्मेशमशमे आचारिकवंतात्कर्तरिक्विप् ४॥ १०५ ॥ गर्भमांसंत्वदयिजव्यवस्त्रभावाय द्वानमंत्रपात्मके अन्ताद्वतिकत्वपाद्वतिरितिब्राह्मणात् तारकाययज्ञभोक्तृत्वेनपापमोचकाय तरायतरत्यनेनेतिव्युत्यत्यायज्ञोपकारणाय यिजनेयजमानाय द्वायब्राह्मणात्रपाय प्रहत्वत्वपाय भा १०६ ॥ १०६ ॥ १०६ ॥ १०६ ॥